



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा और उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी : एक समकालीन अध्ययन

डॉ० सोनी सिन्हा

सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष

गृह विज्ञान विभाग, वुमेन्स कॉलेज, समस्तीपुर

एल० एन० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास केवल ग्रंथों, दार्शनिक सिद्धांतों और आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसमें ज्ञान के सृजन, संरक्षण, संवाद और हस्तांतरण की विविध परंपराएँ भी सम्मिलित हैं। इस परंपरा में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, घोषा, अपाला आदि विदुषी महिलाओं के उल्लेख मिलना यह स्पष्ट करता है कि भारतीय बौद्धिक परंपरा में महिलाओं की ज्ञान-साधना की ऐतिहासिक उपस्थिति रही है। परन्तु इन उदाहरणों को समस्त महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता। ऐतिहासिक स्रोतों से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा तक पहुँच सामाजिक वर्ग, जाति, लिंग और आर्थिक स्थिति से प्रभावित रही है। समकालीन भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। शिक्षा मंत्रालय के उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, 2014-15 में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन लगभग 1.57 करोड़ था, जो 2021-22 में बढ़कर लगभग 2.07 करोड़ हो गया। इसी अवधि में महिला सकल नामांकन अनुपात में भी निरंतर सुधार हुआ और 2022-23 में उच्च शिक्षा का महिला सकल नामांकन अनुपात 30.2 रहा। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की बौद्धिक भूमिका का विवेचन करते हुए समकालीन उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी, उपलब्धियों, चुनौतियों तथा भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध है। इसमें सरकारी रिपोर्टें, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, शैक्षिक दस्तावेजों तथा उपलब्ध अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, महिला शिक्षा, उच्च शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, नारी-चेतना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020।

1. परिचय

शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास का प्रमुख साधन है। उच्च शिक्षा किसी भी समाज में ज्ञान-सृजन, अनुसंधान, नवाचार, नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन की आधारभूत संस्था के रूप में कार्य करती है। इसलिए उच्च शिक्षा में महिलाओं की समान भागीदारी केवल लैंगिक समानता का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के मानव संसाधन विकास, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। भारतीय संदर्भ में महिला शिक्षा की चर्चा करते समय भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहुस्तरीय और दीर्घकालिक परंपरा है, जिसमें वैदिक एवं उपनिषदिक चिंतन, बौद्ध एवं जैन ज्ञान-परंपराएँ, दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र,

कला, साहित्य, लोकज्ञान तथा गुरु-शिष्य परंपरा जैसी अनेक धाराएँ सम्मिलित हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में गार्गी और मैत्रेयी जैसी महिलाओं की बौद्धिक उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं। विभिन्न शैक्षिक स्रोतों में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, घोषा और अपाला जैसी महिलाओं को ज्ञान और दार्शनिक विमर्श से जोड़ा गया है। हालाँकि भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला विदुषियों की उपस्थिति को स्वीकार करते समय ऐतिहासिक जटिलताओं को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। उपलब्ध स्रोत यह भी संकेत करते हैं कि प्राचीन भारत में शिक्षा का व्यापक सामाजिक वितरण समान नहीं था और विदुषी महिलाओं के उदाहरण अक्सर विशिष्ट सामाजिक समूहों से संबंधित थे। अतः गार्गी या मैत्रेयी जैसे उदाहरणों को प्राचीन भारत की प्रत्येक महिला की शैक्षिक स्थिति का प्रमाण मानना ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा।

समकालीन भारत में स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में महिलाओं की संख्या निरंतर बढ़ी है। 2014-15 से 2021-22 के बीच महिला नामांकन 1.57 करोड़ से बढ़कर 2.07 करोड़ हुआ, जो लगभग 32 प्रतिशत वृद्धि है। 2022-23 में उच्च शिक्षा का कुल सकल नामांकन अनुपात 29.5 तथा महिला सकल नामांकन अनुपात 30.2 रहा, जबकि पुरुष जी.ई.आर. 28.9 था। यह तथ्य दर्शाता है कि उच्च शिक्षा में महिलाओं की मात्रात्मक भागीदारी कई स्तरों पर पुरुषों से आगे निकल चुकी है। इस परिवर्तन के बावजूद उच्च शिक्षा में लैंगिक समानता का प्रश्न पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। विषय चयन एवं तकनीकी शिक्षा, शोध नेतृत्व, उच्च प्रशासनिक पदों, डिजिटल संसाधनों, सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं तथा रोजगार के अवसरों में असमानताएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी के बीच संबंध को आलोचनात्मक दृष्टि से समझने का प्रयास करता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी भारतीय समाज में हो रहे सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का स्पष्ट संकेत है। शिक्षा महिलाओं को केवल रोजगार के अवसर ही प्रदान नहीं करती, बल्कि आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक गतिशीलता, आत्मविश्वास एवं निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती है। उच्च शिक्षा महिलाओं को ज्ञान की निष्क्रिय उपभोक्ता से आगे बढ़ाकर ज्ञान की सृजक, शोधकर्ता, शिक्षिका, प्रशासक, नीति-निर्माता एवं बौद्धिक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखती है। यह परिवर्तन व्यक्तिगत सशक्तिकरण के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में इस विषय का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं अन्य पहलों के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम, अनुसंधान एवं उच्च शिक्षा की मुख्यधारा में पुनः स्थापित करने के गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। यदि इस पुनर्स्थापन की प्रक्रिया में महिलाओं के ऐतिहासिक योगदान, उनकी ज्ञान-परंपराओं एवं समकालीन अनुभवों को पर्याप्त स्थान नहीं दिया जाता, तो भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्व्याख्या अधूरी, एकांगी एवं अपूर्ण रह जाएगी। इतिहास गवाह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं ने विभिन्न कालखंडों में महत्वपूर्ण बौद्धिक भूमिका निभाई है, किंतु उनका योगदान अक्सर हाशिए पर रहा या अनदेखा कर दिया गया।

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की बौद्धिक एवं शैक्षिक भूमिका का अध्ययन करना।
- समकालीन भारत में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करना।
- उच्च शिक्षा में महिलाओं के समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियों का अध्ययन करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में महिला शिक्षा एवं लैंगिक समावेशन की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का द्वितीयक अध्ययन है। अध्ययन के लिए प्राथमिक सर्वेक्षण के स्थान पर सरकारी रिपोर्टों, नीति दस्तावेजों, शैक्षिक संस्थानों के प्रकाशनों तथा उपलब्ध अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की शैक्षिक भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल पुरुष-केंद्रित विरासत के रूप में देखना ऐतिहासिक दृष्टि से अधूरा होगा। प्राचीन ग्रंथों, उपनिषदों एवं वैदिक साहित्य में महिलाओं के बौद्धिक योगदान के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। यद्यपि ये उदाहरण संख्या में सीमित थे, फिर भी वे इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि ज्ञान-सृजन, दार्शनिक विमर्श एवं आध्यात्मिक चिंतन में महिलाओं की भूमिका विद्यमान रही है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में गार्गी और मैत्रेयी का उल्लेख विशेष महत्त्व रखता है। बृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी वाचकनवी को राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य के साथ गहन दार्शनिक शास्त्रार्थ करते हुए दर्शाया गया है। उन्होंने ब्रह्म एवं सत्ता की प्रकृति से संबंधित गहन प्रश्न पूछे, जो उनकी तार्किक क्षमता एवं दार्शनिक परिपक्वता को रेखांकित करते हैं। दूसरी ओर, मैत्रेयी को आत्मविद्या एवं उपनिषदिक चिंतन से जोड़ा जाता है। याज्ञवल्क्य द्वारा उन्हें ज्ञान एवं अमरत्व का उपदेश दिए जाने का प्रसंग इस बात का प्रमाण है कि उस काल में महिला को ज्ञान की अधिकारी एवं जिज्ञासु के रूप में स्वीकार किया जाता था। ऋग्वैदिक परंपरा में कुछ सूक्तों की रचना महिला ऋषिकाओं से संबद्ध की गई है। लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववारा एवं रोमशा जैसे नाम इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। ये उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि वैदिक ज्ञान-संचयन एवं रचना प्रक्रिया में महिलाएँ भी सक्रिय थीं। ज्ञान परंपरा का निर्माण केवल पुरुष विद्वानों द्वारा नहीं हुआ था, महिलाओं का भी इसमें योगदान रहा है। हालाँकि, ऐतिहासिक दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि इन उदाहरणों को समस्त महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का प्रतिनिधि न माना जाए। उपलब्ध साहित्य इस ओर संकेत करता है कि प्राचीन भारत में महिला विदुषियों के उदाहरण अपेक्षाकृत सीमित थे और अधिकांश महिलाओं की शिक्षा एवं बौद्धिक भागीदारी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित रहती थी। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक पुनर्पाठ दोहरे एवं संतुलित दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए—एक ओर उपलब्धियों एवं योगदान की पहचान, दूसरी ओर ऐतिहासिक सीमाओं, असमानताओं एवं हाशिए पर रखे गए अनुभवों की आलोचनात्मक स्वीकृति।

6. समकालीन उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी

भारत में उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी पिछले एक दशक में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। यह वृद्धि न केवल नामांकन की संख्या में दिखाई देती है, बल्कि सकल नामांकन अनुपात में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। निम्न तालिका इस प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है:

तालिका 1: भारत में उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी की प्रवृत्ति

वर्ष	महिला सकल नामांकन अनुपात प्रतिशत	महिला नामांकन
2014–15	22.9	लगभग 1.57 करोड़
2017–18	24.6	—
2019–20	26.4	—
2020–21	27.9	—
2021–22	28.5	लगभग 2.07 करोड़
2022–23	30.2	—

स्रोत: शिक्षा मंत्रालय, अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) एवं संबंधित सरकारी आँकड़े।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि महिला सकल नामांकन अनुपात वर्ष 2014–15 के 22.9 प्रतिशत से बढ़कर 2022–23 में 30.2 प्रतिशत हो गया है। इसी अवधि में देश का कुल उच्च शिक्षा सकल नामांकन अनुपात भी 23.7 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 29.5 प्रतिशत हुआ। यह वृद्धि महिलाओं की उच्च शिक्षा तक पहुँच में हुए सुधार को दर्शाती है।

उच्च शिक्षा में महिलाओं की संख्या बढ़ने के बावजूद विषयवार भागीदारी समान नहीं है। 2022–23 के उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के अनुसार कला विषय में महिला विद्यार्थियों की हिस्सेदारी 51.9 प्रतिशत, विज्ञान में 52 प्रतिशत और चिकित्सा विज्ञान में 57.7 प्रतिशत थी। इसके विपरीत इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 30.1 प्रतिशत थी। शिक्षा विषय में महिलाओं की हिस्सेदारी 63.3 प्रतिशत रही।

तालिका 2: चयनित विषयों में महिला भागीदारी, 2022–23

विषय	महिला विद्यार्थियों की हिस्सेदारी
कला	51.9 प्रतिशत
विज्ञान	52.0 प्रतिशत
वाणिज्य	47.5 प्रतिशत
इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी	30.1 प्रतिशत
चिकित्सा विज्ञान	57.7 प्रतिशत
शिक्षा	63.3 प्रतिशत

स्रोत: शिक्षा मंत्रालय, अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) एवं संबंधित सरकारी आँकड़े।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है— क्या उच्च शिक्षा में महिलाओं की संख्या बढ़ना ही पर्याप्त है? उत्तर नकारात्मक है। यदि महिलाओं की भागीदारी कुछ विशिष्ट विषयों में अधिक और तकनीकी एवं उभरते ज्ञान क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम रहती है, तो रोजगार और आर्थिक अवसरों में समानता स्वतः सुनिश्चित नहीं होगी।

7. उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने वाले प्रमुख कारक

उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी किसी एक कारण का परिणाम नहीं है, बल्कि अनेक सामाजिक, आर्थिक, नीतिगत एवं सांस्कृतिक कारकों की समन्वित भूमिका का परिणाम है। इन कारकों ने मिलकर महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा को अधिक सुलभ, आकर्षक एवं व्यावहारिक बनाया है।

(क) सामाजिक जागरूकता – पिछले कुछ दशकों में महिला शिक्षा के प्रति परिवार एवं समाज की सोच में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। शिक्षा को अब केवल विवाह से पूर्व की औपचारिकता न मानकर जीवन-निर्माण एवं सशक्तिकरण का आधार माना जाने लगा है। मीडिया, सामाजिक आंदोलनों एवं जागरूकता अभियानों ने इस सोच को और मजबूत किया है। परिणामस्वरूप कई परिवार अब अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा उनके भविष्य में निवेश करने को तैयार रहते हैं।

(ख) आर्थिक आत्मनिर्भरता की आकांक्षा – उच्च शिक्षा को अब केवल व्यक्तिगत विकास या सामाजिक प्रतिष्ठा का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण माध्यम माना जाने लगा है। रोजगार के बढ़ते अवसर, विशेषकर सेवा क्षेत्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रशासन में, महिलाओं को उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित करते हैं। कई छात्राएँ उच्च शिक्षा को आर्थिक सुरक्षा एवं परिवार के आर्थिक योगदान का साधन मानती हैं।

(ग) छात्रवृत्ति एवं सरकारी योजनाएँ – सरकार द्वारा संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ, शुल्क में छूट, आवासीय सुविधाएँ एवं विशेष सहायता कार्यक्रम आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की छात्राओं के लिए उच्च शिक्षा को सुलभ बनाते हैं। बेटा बचाओ बेटा पढ़ाओ, सेंट्रल सेक्टर स्कॉलरशिप, पोस्ट-मैट्रिक

छात्रवृत्ति एवं राज्य स्तरीय योजनाओं ने नामांकन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन नीतियों ने आर्थिक बाधाओं को काफी हद तक कम किया है।

(घ) डिजिटल शिक्षा – ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म एवं मुक्त शैक्षिक संसाधनों ने भौगोलिक दूरी एवं भौतिक उपस्थिति की बाधाओं को कुछ हद तक कम किया है। विशेष रूप से महामारी काल के बाद डिजिटल शिक्षा ने ग्रामीण एवं दूरदराज क्षेत्रों की छात्राओं को उच्च शिक्षा से जोड़ने में सहायता की। यद्यपि डिजिटल विभाजन अभी भी एक गंभीर चुनौती है, फिर भी प्रौद्योगिकी ने पहुंच के नए द्वार अवश्य खोले हैं।

(च) महिला रोल मॉडल – उच्च शिक्षा, शोध, विज्ञान, प्रशासन एवं सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति छात्राओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन रही है। महिला शिक्षिकाएँ, वैज्ञानिक, शोधकर्ता, प्रशासक एवं उद्यमी रोल मॉडल के रूप में कार्य करती हैं। इनकी सफलता की कहानियाँ छात्राओं में आत्मविश्वास जगाती हैं तथा उन्हें उच्च शिक्षा एवं करियर के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

8. उच्च शिक्षा में महिलाओं के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, फिर भी उनके समक्ष अनेक संरचनात्मक, सामाजिक एवं संस्थागत चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ न केवल प्रवेश के बाद की निरंतरता को प्रभावित करती हैं, बल्कि शोध, करियर एवं नेतृत्व स्तर तक पहुंचने की प्रक्रिया को भी बाधित करती हैं।

(क) सामाजिक एवं पारिवारिक अपेक्षाएँ – कई परिवारों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद महिलाओं से घरेलू दायित्वों, विवाह एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देने की अपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप शोध कार्य, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, दीर्घकालिक अकादमिक करियर एवं व्यावसायिक विकास के लिए उपलब्ध समय एवं ऊर्जा सीमित हो जाती है। विवाह के बाद स्थान परिवर्तन, पारिवारिक दबाव एवं दोहरी जिम्मेदारी कई बार शिक्षा अथवा करियर को बीच में ही छोड़ने का कारण बन जाती है।

(ख) विषयगत लैंगिक विभाजन – उच्च शिक्षा में महिलाएँ मुख्यतः कला, मानविकी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी विषयों में अधिक केंद्रित हैं, जबकि इंजीनियरिंग, कंप्यूटर विज्ञान, भौतिकी एवं कुछ तकनीकी क्षेत्रों में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम है। वर्ष 2022-23 में इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी में महिला विद्यार्थियों की हिस्सेदारी लगभग 30.1 प्रतिशत रही। यह विभाजन करियर विकल्पों को सीमित करता है।

(ग) डिजिटल विभाजन – ऑनलाइन शिक्षा एवं डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ने के बावजूद उपकरण (लैपटॉप-स्मार्टफोन), तेज इंटरनेट, डिजिटल कौशल एवं अध्ययन के लिए शांत स्थान की असमान उपलब्धता महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित करती है। विशेषकर ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की छात्राएँ इस डिजिटल विभाजन से अधिक प्रभावित होती हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है।

(घ) ग्रामीण-शहरी अंतर – ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा संस्थानों की सीमित संख्या, गुणवत्तापूर्ण कॉलेजों की दूरी, परिवहन की समस्या, सुरक्षित छात्रावास की कमी एवं आर्थिक कठिनाइयाँ छात्राओं के लिए अतिरिक्त बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। कई बार परिवार सुरक्षा एवं खर्च के कारण लड़कियों को घर से दूर शिक्षा प्राप्त करने से रोकते हैं, जिससे उनका शैक्षिक विकास सीमित रह जाता है।

(च) शोध एवं नेतृत्व में प्रतिनिधित्व – उच्च शिक्षा में महिला विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने के बावजूद शोध नेतृत्व, प्रोफेसरशिप, विभाग अध्यक्ष, कुलपति एवं अन्य उच्च प्रशासनिक तथा निर्णय-निर्माण पदों पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी असमान है।

(छ) सुरक्षा एवं संस्थागत वातावरण – महिलाओं के लिए सुरक्षित, सम्मानजनक एवं लैंगिक रूप से संवेदनशील परिसर उच्च शिक्षा में उनकी निरंतर भागीदारी के लिए अत्यंत आवश्यक है। यौन उत्पीड़न,

असुरक्षित परिवहन, छात्रावास की समस्याएँ एवं असंवेदनशील संस्थागत वातावरण कई बार छात्राओं को शिक्षा जारी रखने से हतोत्साहित करते हैं।

9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और महिला उच्च शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक एवं दूरगामी परिवर्तन का दस्तावेज है। इस नीति ने उच्च शिक्षा में समानता, समावेशन एवं उत्कृष्टता को केंद्र में रखते हुए महिलाओं सहित सभी वंचित वर्गों की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष बल दिया है। नीति स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि उच्च शिक्षा में लैंगिक असमानता को दूर किए बिना समावेशी एवं न्यायसंगत विकास संभव नहीं है। NEP-2020 उच्च शिक्षा में सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों— विशेषकर महिलाओं, अनुसूचित जाति/जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं दिव्यांगजन की भागीदारी बढ़ाने के लिए ठोस प्रावधान करती है। इसमें छात्रवृत्ति का विस्तार, शुल्क सहायता, आवासीय सुविधाएँ, सुरक्षित परिसर एवं परामर्श सेवाओं को मजबूत करने की बात कही गई है। नीति का उद्देश्य केवल नामांकन बढ़ाना नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करना भी है। नीति में लिंग समावेशन कोष की अवधारणा का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इस कोष का उद्देश्य लड़कियों एवं अन्य लक्षित समूहों के लिए समान तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसरों को मजबूत करना है। इसके माध्यम से लैंगिक अंतराल को कम करने, सुरक्षित एवं संवेदनशील परिसर विकसित करने तथा महिलाओं की उच्च शिक्षा में निरंतरता सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने हैं।

NEP-2020 का भारतीय ज्ञान परंपरा से गहरा संबंध भी महिला उच्च शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। नीति भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान प्रणालियों, भारतीय ज्ञान परंपराओं एवं बहुविषयक शिक्षा पर बल देती है। यह दृष्टिकोण उच्च शिक्षा को भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से जोड़ने का अवसर प्रदान करता है। यदि इस पुनर्स्थापन की प्रक्रिया में महिलाओं के ऐतिहासिक योगदान, पारंपरिक ज्ञान, अनुभवजन्य ज्ञान एवं समकालीन बौद्धिक योगदान को पर्याप्त स्थान दिया जाए, तो यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रभावी एवं सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील कदम सिद्ध हो सकता है।

10. भारतीय ज्ञान परंपरा का समकालीन पुनर्पाठ

भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक उच्च शिक्षा में शामिल करते समय केवल अतीत के गौरवगान या सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इसका आलोचनात्मक, वैज्ञानिक, समावेशी एवं लैंगिक दृष्टिकोण से पुनर्पाठ किया जाए। ऐसा पुनर्पाठ न केवल ज्ञान परंपरा को समृद्ध करेगा, बल्कि उच्च शिक्षा को अधिक समतामूलक, प्रासंगिक एवं लोकतांत्रिक भी बनाएगा। इस दिशा में निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है—

- पहला, भारतीय महिला विदुषियों एवं ज्ञान-सृजकों के योगदान पर व्यवस्थित शोध को बढ़ावा दिया जाए। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों के साथ-साथ मध्यकालीन एवं आधुनिक काल की महिला विद्वानों, लेखिकाओं, संतों एवं विचारकों के योगदान को अकादमिक रूप से उद्घाटित किया जाए।
- दूसरा, भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित पाठ्यक्रमों में महिलाओं के दृष्टिकोण, अनुभव एवं योगदान को पर्याप्त स्थान दिया जाए। पाठ्य सामग्री में केवल पुरुष विद्वानों के विचारों तक सीमित न रहकर महिला ज्ञान-दृष्टि को भी समाहित किया जाए।
- तीसरा, महिलाओं के लोक ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान, घरेलू ज्ञान एवं अनुभवजन्य ज्ञान को अकादमिक अनुसंधान से जोड़ा जाए। कृषि, स्वास्थ्य, पोषण, पर्यावरण एवं शिल्प से जुड़े महिलाओं के ज्ञान को औपचारिक ज्ञान प्रणाली का हिस्सा बनाया जाए।
- चौथा, महिला शोधार्थियों को भारतीय ज्ञान प्रणालियों से संबंधित अंतरविषयी अनुसंधान के लिए विशेष अवसर, छात्रवृत्ति एवं मार्गदर्शन प्रदान किए जाएँ, ताकि वे इस क्षेत्र में सक्रिय रूप से योगदान कर सकें।

- पाँचवाँ, भारतीय भाषाओं में महिला-केंद्रित ज्ञान सामग्री का निर्माण, अनुवाद एवं डिजिटलीकरण किया जाए, जिससे यह ज्ञान अधिक व्यापक एवं सुलभ हो सके।
- छठा, गार्गी और मैत्रेयी जैसी ऐतिहासिक विदुषियों को केवल प्रतीक या प्रेरणा-पुंज के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उनके प्रश्न, तर्क-पद्धति, ज्ञान-दृष्टि एवं बौद्धिक स्वायत्तता को आधुनिक शैक्षिक विमर्श, दर्शन एवं नारीवादी चिंतन से जोड़ा जाए।

11. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा और उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी का संबंध केवल अतीत और वर्तमान के बीच तुलना का विषय नहीं है, बल्कि यह भारत में ज्ञान, समानता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। भारतीय बौद्धिक परंपरा में गार्गी, मैत्रेयी और अन्य विदुषियों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि महिलाओं की ज्ञान-साधना भारतीय इतिहास का अभिन्न हिस्सा रही है। दूसरी ओर, ऐतिहासिक स्रोतों की सीमाओं को स्वीकार करना भी आवश्यक है, ताकि अतीत की कुछ विशिष्ट उपलब्धियों को समस्त महिलाओं की वास्तविक स्थिति का सामान्य प्रतिनिधित्व न मान लिया जाए। समकालीन भारत में उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी निश्चित रूप से महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन है। 2022-23 में महिला सकल नामांकन अनुपात का 30.2 प्रतिशत तक पहुँचना और अनेक विषयों में महिलाओं का पुरुषों के बराबर या उनसे अधिक प्रतिनिधित्व इस परिवर्तन को स्पष्ट करता है। फिर भी वास्तविक लैंगिक समानता तब स्थापित होगी जब महिलाओं को शिक्षा में प्रवेश के साथ-साथ ज्ञान-सृजन, अनुसंधान, नवाचार, तकनीकी शिक्षा, नेतृत्व और निर्णय-निर्माण में समान अवसर प्राप्त होंगे।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा का समकालीन पुनर्पाठ ऐसा होना चाहिए जो अतीत की उपलब्धियों को स्वीकार करने के साथ-साथ उसकी सामाजिक सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करे। इस परंपरा को महिलाओं की बौद्धिक स्वतंत्रता, प्रश्न करने की क्षमता, ज्ञान-सृजन और सामाजिक नेतृत्व से जोड़ना आवश्यक है। इसी दृष्टि से भारतीय ज्ञान परंपरा उच्च शिक्षा में महिला सशक्तिकरण का केवल सांस्कृतिक आधार नहीं, बल्कि समावेशी और ज्ञान-आधारित भारत के निर्माण का महत्वपूर्ण संसाधन बन सकती है।

संदर्भ सूची :-

- [1] अग्रवाल, एस. पी., एवं अग्रवाल, जे. सी. (1992). भारत में महिला शिक्षा: ऐतिहासिक समीक्षा, वर्तमान स्थिति एवं सांख्यिकीय संकेतकों के साथ परिप्रेक्ष्य योजना. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
- [2] श्रीवास्तव, जी. (2000). उन्नीसवीं शताब्दी में महिलाओं की उच्च शिक्षा. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
वर्गीस, एन. वी., एवं सभरवाल, एन. एस. (संपा.). (2024). इंडिया हायर एजुकेशन रिपोर्ट 2022: उच्च शिक्षा में महिलाएँ. रूटलेज इंडिया।
- [3] बस्सी, टी. (2021). सिख कन्या महाविद्यालय का अध्ययन: शिक्षा, धर्म एवं जेंडर मुद्दे. स्प्रिंगर।
- [4] एलेंडर, टी. (2016). औपनिवेशिक भारत में स्त्रीत्व सीखना, 1820-1932. मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [5] मोंडल, ए. (संपा.). (2023). भारत में महिला शिक्षा की गतिशीलता. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
- [6] गौतम, एम. (2015). भारत में जेंडर, विषय चयन एवं उच्च शिक्षा: महिला विद्यार्थियों के 'विकल्पों' एवं बाधाओं का अन्वेषण. कंटेम्पररी एजुकेशन डायलॉग, 12(1). <https://doi-org/10-1177/0973184914556865>
- [7] मुखर्जी, ए., एवं दासगुप्ता, एस. (2023). भारत में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन: क्या छात्रावास आवास की भूमिका है? जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इश्यूज, 57(2), 546-554. <https://doi-org/10-1080/00213624-2023-2201800>
- [8] कुमारी, एस. (2025). महिला शिक्षा: उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत में पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु. कंटेम्पररी एजुकेशन डायलॉग, 19(1). <https://doi-org/10-1177/22308075241273724>
- [9] मैथ्यू, पी. (2020). भारत में महिला शिक्षा में महिला संगठनों की भूमिका, 1917-1947. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 46(1), 84-102.

- [10] राजपूत, बी., एवं कंवरिया, वी. के. (2025). शक्ति एवं शिक्षा: भारतीय ज्ञान परंपराओं में महिला शिक्षा एवं सशक्तिकरण. रीसेंट रिसर्च इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमेनिटीज, 12(विशेषांक 01), 120–125.
<https://doi-org/10-5281/zenodo-15823786>
- [11] हैंडरसन, ई. एफ., सभरवाल, एन. एस., एवं थॉमस, ए. (2024). उच्च शिक्षा पहुंच की लैंगिक स्थितियाँ: हरियाणा, भारत के मामले के माध्यम से जेंडर प्रिज्म विश्लेषण को आगे बढ़ाना. एजुकेशनल रिव्यू.
<https://doi-org/10-1080/00131911-2024-2325066>
- [12] माथुर, आर. बी. (1948). भारत में महिला शिक्षा का प्रारंभिक इतिहास. जर्नल ऑफ द यूनिवर्सिटी ऑफ बॉम्बे.
- [13] भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय।
- [14] भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2023)। अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) 2021–22। शिक्षा मंत्रालय।
- [15] भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2025)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: पहल एवं उपलब्धियाँ। शिक्षा मंत्रालय।
- [16] भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2023)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत लैंगिक समावेशन निधि (Gender Inclusion Fund) की स्थापना। शिक्षा मंत्रालय।
- [17] विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2023)। उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान को समाहित करने के लिए दिशानिर्देश। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- [18] विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2023)। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर संकाय प्रशिक्षण–अभिमुखीकरण के लिए दिशानिर्देश। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- [19] विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2023)। भारतीय विरासत एवं संस्कृति पर आधारित पाठ्यक्रम प्रारंभ करने के लिए दिशानिर्देश। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- [20] इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय। (2017)। भारतीय समाज में लैंगिक परिप्रेक्ष्य: प्राचीन भारतीय समाज।